एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 04 (सितम्बर-अक्टूबर, 2021)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

रिजका - एक गुणकारी चारा फसल

(*ओम प्रकाश जीतरवाल[1], बाबू लाल धायल[1], केशर मल चौधरी[2] एवं सुशील[1])
[1]चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा
[2] श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
* omprakashjitarwal@gmail.com

रिजका रबी में उगाई जाने वाली एक बहुवर्षीय फलीदार चारे की सिंचित फसल है रिजका एक बार बोने के बाद तीन चार सालो तक उपज देता है यह पौष्टिक गुणों से भरपूर है जिसको पशु बड़े चाव से खाते है किसान की आजीविका में पशुधन का महत्वपूर्ण स्थान है पशुओ की दूध उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए संतुलित पशुआहार बहुत जरुरी है वर्षभर हरे चारे के रूप मे रिजके का महत्वपूर्ण स्थान है क्योकि पशुआहार की दृष्टि से रिजका बहुत ही गुणकारी चारा माना जाता है रिजका के चारे मे प्रोटीन की मात्रा 15 से 20 प्रतिशत तक पायी जाती है इस फसल की कटाई कई बार ली जाती है इसकी जड़ो मे उपस्थित राइजोबियम जीवाणु नत्रजन स्थिरीकरण कर भूमि कि उर्वरा शक्ति बढ़ाता है रिजका पशुओ का पसंदीदा चारा भी है पशुओ को अत्यधिक रिजका खिलाने पर आफरा नामक समस्या हो जाती है इसलिए रिजका पशु को उचित मात्रा मे ही खिलाना चाहिए।

जलवायु - रिजका की खेती के लिए शुष्क एवं अर्धशुष्क क्षेत्र जहाँ उचित सिंचाई की व्यवस्था हो अच्छी बढ़वार के लिए 25 से 28 डिग्री सेल्सियस तापमान अच्छा रहता है।

मृदा - रिजके की अच्छी उपज लेने के लिए उचित जल निकास वाली जीवांश युक्त दोमट मिटटी अच्छी रहती है जिसका पी एच मान 6.5 से 7.5 तक हो उचित माना जाता है।

खेत तैयार करना - बुआई से पहले मिटटी पलटने वाले हल से 3 से 4 बार अच्छी जुताई करे तथा खेत को भुरभुरा और समतल कर ले हर जुताई के बाद पाटा लगाए व अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 40 से 45 दिन पहले खेत मे अच्छी तरह मिला देवे।

बीजदर - रिजके कि छिड़कवा विधि से बुवाई करने के लिए 25 से 30 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त रहता है।

बुआई का समय - बुआई के लिए अक्टूबर से नवम्बर का समय उचित माना जाता है। बीजो को 6 से 8 घंटे तक पानी मे भिगोकर रखे राईजोबियम कल्चर मिलाकर बुआई करे बीज को खेत मे छिड़ककर दन्ताली से मिटटी मे मिलाकर सिंचाई कर दे।

बीजोपचार - रिजके के बीज को बुआई से पहले राईजोबियम कल्चर से उपचारित करना चाहिए एक हेक्टेयर बीज के लिए 300 ग्राम गुड़ का पानी मे घोल बनाकर घोल मे 600 ग्राम राईजोबियम कल्चर मिलाकर बीजो को उपचारित करके बोये।

खाद एवं उर्वरक - बुआई से 40 से 45 दिन पहले गोबर कि अच्छी सड़ी हुई खाद 25 से 30 टन प्रति हेक्टेयर डाले। 20 से 25 किलोग्राम नत्रजन, 100 किलोग्राम फास्फोरस व 25 से 30 किलोग्राम पोटाश कि प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। नत्रजन कि आधी मात्रा व फास्फोरस, पोटाश कि पूरी मात्रा बुआई के समय देवे, नत्रजन कि शेष आधी मात्रा तीन भागो मे बांटकर प्रत्येक दूसरी कटाई के बाद छिड़क कर सिंचाई करे।

सिंचाई - रिजका मे सिंचाई सर्दियों मे 10 से 12 दिन के अंतराल पर व गर्मियों मे 6 से 8 दिन के अंतराल पर करनी चाहिए व वर्षा ऋतु मे सिंचाई कि विशेष आवश्यकता नहीं रहती है।

खरपतवार प्रबंधन - खेत से समय पर खरपतवार निकालते रहना चाहिए जिससे खेत कि साफ सफाई रहती है व पौधे निरोगी रहते है। मुख्यतया रिजके मे अमरबेल कि समस्या रहती है इसलिए बुआई से पहले ही बीज अमरबेल के बीजो से मुक्त होने चाहिए या बीजो को 2 प्रतिशत नमक के घोल मे डालकर 5 मिनट रखना चाहिए ताकि हलके बीज व अमरबेल के बीज को रिजके से अलग किया जा सके या समय - समय पर अमरबेल को पौधे सहित निकाल सकते है ।

कटाईया - फसल कि पहली कटाई 55 से 60 दिन पर करना उचित रहता है तथा बाद मे 30 से 35 दिन के अंतर पर करना चाहिए।

किस्में - रिजका कि महत्वपूर्ण किस्में एल एल सी - 3, एल एल सी - 5, आनंद - 2, टाइप- 9, टाइप - 8, सिरसा- 8, सिरसा - 9, एन डी आर आई सिलेक्शन – 1, आर - एल – 88 आदि प्रमुख है।

उपज - रिजका कि 7 से 8 कटाईयो मे 700 से 800 क्विंटल प्राप्त होता है एवं 140 से 160 क्विंटल सूखा चारा प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता हैं।

रोग प्रबंधन - शरद ऋतु मे अधिक नमी होने के कारण मृदुरोमिल आशिता नामक रोग का प्रकोप होता है जिससे पतिया ख़राब हो जाती है।

रोकथाम - रोकथाम के लिए 0.2 प्रतिशत मैंकोजेब के घोल का छिड़काव 10 से 15 दिन के अंतराल पर 2 से 3 बार करे।

नोट - छिड़काव करने के बाद 20 दिन तक पशुओ को नहीं खिलाये।